

१. चुरादिगण

इस गण की “चुर” सबसे पहली धातु है। “चुर” आदि धातु का विवरण जिस गण में हो उसको “चुरादिगण” कहते हैं।

इस गण में धातु और प्रत्यय के मध्य णि (अय्) विकरण आता है। गुण - उपधागुण वृद्धि, उपधावृद्धि आदि का विधान है। जैसे :- चुर + अय + ति = चुरयति। उपधा गुण होने पर “चोरयति” इत्यादि।

धातुरूप

		चुर = चुनारा			(मृग) = ढूँढना		
		(लट्)			(लट्)		
	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०	द्विव०	बहु व०	
प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	मृगयते	मृगयेते	मृगयन्ते	
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	मृगयसे	मृगयेथे	मृगयध्वे	
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	मृगये	मृगयावहे	मृगयामहे	
		(लृट्)			(लृट्)		
प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	मृगयिष्यते	मृगयिष्येते	मृगयिष्यन्ते	
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ	मृगयिष्यसे	मृगयिष्येथे	मृगयिष्यध्वे	
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः	मृगयिष्ये	मृगयिष्यावहे	मृगयिष्यामहे	
		(लोट्)			(लोट्)		
प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	मृगयताम्	मृगयेताम्	मृगयन्ताम्	
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत	मृगयस्व	मृगयेथाम्	मृगयध्वम्	
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	मृगयै	मृगयावहै	मृगयामहै	
		(लङ्)			(लङ्)		
प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	अमृगयत	अमृगयेताम्	अमृगयन्त	
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	अमृगयथाः	अमृगयेथाम्	अमृगयध्वम्	
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	अमृगये	अमृगयावहि	अमृगयामहि	
		(विधिलिङ्)			(विधिलिङ्)		
प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयातम्	चोरयेयुः	मृगयेत	मृगयाताम्	मृगयेरन्	
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	मृगयेथाः	मृगयेयाथाम्	मृगयेध्वम्	
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	मृगयेय	मृगयेवहि	मृगयेमहि	

तदनुरूप धातुरूप

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
अर्च्	पूजा करना	अर्चयति	अर्चयिष्यति	अर्चयत्	आर्चयत्	अर्चयेत्
कथ्	कहना	कथयति	कथयिष्यति	कथयतु	अकथयत्	कथयेत्
गण्	गिनना	गणयति	गणयिष्यति	गणयतु	अगणयत्	गणयेत्
चिन्त्	सोचना	चिन्तयति	चिन्तयिष्यति	चिन्तयतु	अचिन्तयत्	चिन्तयेत्
तड् (ताड्)	पीटना	ताडयति	ताडयिष्यति	ताडयतु	अताडयत्	ताडयेत्
तुल्	तोलना	तोलयति	तोलयिष्यति	तोलतु	अतोलयत्	तोलयेत्
दण्ड्	दण्ड देना	दण्डयति	दण्डयिष्यति	दण्डयतु	अदण्डयत्	दण्डयेत्
पाल्	पालना	पालयति	पालयिष्यति	पालयतु	अपालयत्	पालयेत्

पुष्	पोसना	पोषयति	पोषयिष्यति	पोषयतु	अपोषयत्	पोषयेत्
भक्ष	खाना	भक्षयति	भक्षयिष्यति	भक्षयतु	अभक्षयत्	भक्षयेत्
भूष	सजना	भूषयति	भूषयिष्यति	भूषयतु	अभूषयत्	भूषयेत्
मन्त्र	सलाह करना	मन्त्रयति	मन्त्रयिष्यति	मन्त्रयतु	अमन्त्रयत्	मन्त्रयेत्
मिक्ष	मिलाना	मिश्रयति	मिश्रयिष्यति	मिश्रयतु	अमिश्रयत्	मिश्रयेत्
रच्	रचना	रचयति	रचयिष्यति	रचयतु	अरचयत्	रचयेत्
वर्ण	वर्णन करना	वर्णयति	वर्णयिष्यति	वर्णयतु	अवर्णयत्	वर्णयेत्
सूच्	सूचित करना	सूचयति	सूचयिष्यति	सूचयतु	असूचयत्	सूचयेत्
घुष्	घोषणा करना	घोषयति	घोषयिष्यति	घोषयतु	अघोषयत्	घोषयेत्

संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क)

1. वह घोड़े के बदले में गाय खरीदता है।
2. विदेशी भारत के विषय में क्या जानेगा ?
3. रसोइये ने रोटी के लिए आटा गूँधा था।
4. सत्य मन को पवित्र करता है, जल शरीर को।
5. उसने भैंस को घर के अन्दर बाँधा है।
6. सिपाही ने चोर को पकड़ा।
7. मूर्ख-पुत्र आजीवन दुःख देता रहता है।
8. दुकानदार लस्सी के लिए दही मथेगा।
9. पढ़ने के लिए वे पुस्तकें खरीदते हैं।
10. शिशु भरत ने शेरनी के बच्चे को पकड़ा।

(ख)

1. चोरी करना पाप है, किसी की पुस्तक मत चुराओ।
2. पाठ याद न करने पर गुरु शिष्य को पीटता है।
3. मनु ने राष्ट्र के हित में सोचा था।
4. कस्तूरी मृग गन्ध को जंगलों में ढूँढ़ता है।
5. स्वामी विवेकानन्द जी को भारतीय संस्कृति की चिन्ता थी।
6. उद्यमी सुख और दुःख की चिन्ता नहीं करते।
7. नीच अपने और पराये की गणना करते हैं।
8. उसने ईश्वर की पूजा की तथा उसकी सत्ता की घोषणा की।
9. ईश्वर सबको पालता है तथा दण्ड भी देता है।
10. कालीदास ने अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक की रचना की।
11. माँ बच्चे का लालन-पालन करती है।
12. शकुन्तला की सखियाँ उसे सजाती हैं।
13. शिव वीर ने गौर सिंह से मन्त्रणा की।

नोट :- “दशगण” धातुओं का संक्षेप परिचय इन अध्यायों में दिया गया है। अर्थ सहित धातु रूपों का ज्ञान संस्कृत ज्ञान के लिए अनिवार्य है। अतः इन्हें याद करना अपेक्षित है।

अनुवाद में इनका ही प्रयोग करें।

